वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के दौर में हिन्दी

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

हाल के वर्षों में हिन्दी ने उल्लेखनीय प्रगति की है। आज बाजार से लेकर विचार तक हिन्दी का महत्त्व दिख रहा है। इण्टरनेट, विज्ञापनों, फिल्मों व उपन्यासों की हिन्दी से भले ही अतिशुद्धतावादी असहमत हों, लेकिन यह भी सच है कि हिन्दी के इस रूप को युवा वर्ग ने अपना लिया है। हिन्दी के संदर्भ में संचार माध्यमों की यह एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। हिन्दी का यह स्वरूप उसकी समाहित करने की प्रवृत्ति के कारण है। आज हिन्दी के विशाल बाजार और उपभोक्ता संसार के कारण तकनीकि के क्षेत्र में खूब प्रगति की है। वर्तमान समय में हिन्दी में अच्छे फांट आ गए हैं। कई किस्म के टाइपिंग की–बोर्ड, यूनीकोड,ध्वनि से टाइपिंग की तकनीकी आने के साथ ही व्याकरण की जाँच होने के साथ ही पुराना टेक्स्ट भी कन्वर्ट होने लगा है। अब गूगल में हिन्दी में खोज होने लगी है। हिन्दी के अनेक मोबाइल एप्स और हिन्दी में सोशल नेटवर्किंग ,ईमेल और ब्लॉगिंग आ गई हैं। अखबारों से लेकर वीडियो चौनलों तक के अनुप्रयोग में हिन्दी चलने लगी। ग्राफिक्स और एनीमेशन में हिन्दी आ गई। ओसीआर, हस्तलिपि की पहचान जैसा आधुनिक अनुप्रयोग भी आ गये हैं। लगभग सभी जरूरी सॉफ्टवेयरों का हिन्दीकरण भी हो गया है। इस तरह आज की हिन्दी तकनीकि समृद्धि और सुविधाओं से सम्पन्न हो गयी है। अपने संख्याबल के कारण यदि हिन्दी संसार उपलब्ध तकनीकि का भरपूर दोहन करें तो यह भविष्य में बाजार के लिए सबसे सशक्त व समृद्ध भाषा बन सकती है।

बीज शब्द– *वैश्वीकरण,बाजारवाद,हिन्दी,तकनीकी, आधुनिक अनुप्रयोग।*

आज बाजारीकरण का दौर चल रहा है। ऐसे में हमारी आस्था और विश्वास भी हमसे बाहर की वस्तुएँ बन गये हैं। ऐसे में भाषा सर्वेक्षणों पर अनवरत कार्य करने वाले डॉ0 जयंती प्रसाद नौटियाल के शब्दों में कहें तो ''आज दुनिया की सबसे बड़ी आबादी द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है। दुनिया की आबादी का 18 प्रतिशत हिस्सा इसे समझता है, जबकि चीनी भाषा मंदारिन समझने वालों की संख्या 15.27 प्रतिशत है और अंग्रेजी समझने वालों की संख्या 13.85 प्रतिशत बताई गयी है।'' उपर्युक्त अध्ययन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में न केवल अग्रणी है अपितु वैश्विक स्तर पर उपलब्ध तकनीकि के आधार पर भी अद्वितीय है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मात्र हिन्दी में ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता भी है।

आज का समय भूमंडलीकरण का समय है, जिसका असली चेहरा बाजार के रूप में सबके समक्ष उपस्थित हुआ है। तेजी से फैलती बाजार–संस्कृति ने भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता, खानपान, पहनावा, भाषा, संस्कृति आदि को प्रभावित किया है। हमारे सपनों में बाजार का प्रवेश हो चुका है। मनुष्य की अस्मिता सुरक्षित रखने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। भाषा

केवल अभिव्यक्ति का माध्यम भर ही नहीं है, अपितु वह सभ्यता और संस्कृति की वाहक भी है। किसी भी समाज की आत्मा उसकी भाषा में ही सुरक्षित रह सकती है।

यदि वास्तव में सरकार को हिन्दी के वर्चस्व को प्रतिस्थापित व गौरवान्वित करना है तो निश्चित रुप से एक निर्देश जारी कर अंग्रेजी की अनिवार्यता को खत्म कर देना चाहिए और समस्त कार्यालयों में भारतीय भाषा में कार्य करने को अनिवार्यता लागू कर देना चाहिये। यही नहीं पाठशालाओं, अदालतों, विधानसभाओं, फौज और कामकाज में अंग्रेजी की समाप्ति व हिन्दी की अनिवार्यता अवश्य लागू करना होगा।

आज समाज में हम सभी को हिन्दी का उपभोक्ता के साथ–साथ प्रदाता भी बनना होगा जिससे तकनीकी, वैज्ञानिक, औद्योगिक शब्दावली का निर्माण हिन्दी में सरल करके, हिन्दी भाषा को जीवन शैली का अंग बनाकर इसे पुनः प्रतिविम्बित किया जा सकेगा।

आज का युग आधुनिकता की अपेक्षा संगणकीय युग बनता जा रहा है। वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी प्रगति के कारण काफी परिवर्तन आ रहा है। इक्कीसवीं सदी की हिन्दी केवल साहित्यिक भाषा नहीं है वल्कि वह तकनीक, विज्ञान प्रविधि, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय एवं बाजार की भाषा हो गयी है। उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के साथ हिन्दी का भाव एवं प्रभाव काफी बढ़ रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत जैसे बड़े बाजार तक पहुँचना है। भारतीय समुदाय को उपभोक्ता बनाना है। इसलिए हिन्दी भाषा संपर्क भाषा के रूप में अधिक सफल, अनुकूल एवं उचित माध्यम हो सकती है। प्रिंटमीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और विज्ञापन के लिए हिन्दी भाषा ही उपुयक्त है। हिन्दी ही विज्ञान, प्रविधि, उद्योग की भाषा की भूमिका निभाएगी। 'हिन्दी विश्व' की जब चर्चा करते हैं तो यह हिन्दी का वह वृहत्तर समाज है जो भारत सहित विश्व के उन अनेक देशों तक परिव्याप्त है। जहाँ हिन्दी बोली समझी जाती है और जहाँ हिन्दी में साहित्य उपलब्ध है। ''यूनेस्कों की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 137 देशों में हिन्दी विद्यमान है। आज के वैश्विक फलक पर हिन्दी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राजभाषा के साथ–साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। ''विश्व में चीनी भाषा (मंदारिन) के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। जयंती प्रसाद नौटियाल अपने सर्वेक्षण में तो हिन्दी को प्रथम स्थान पर पहुँचने की बात करते हैं। इस क्रम में अंग्रेजी आज तीसरे पायदान पर है। विश्व के लगभग एक सौ पचास देशों के लगभग पाँच सौ केन्द्रों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है, जहाँ न जाने कितने विद्वान अपना योगदान दे रहे हैं। कंप्यूटर, मोबाइल और आई–पैड पर हिन्दी की पहुँच ने यह बात सिद्ध कर दी है कि आने वाले समय में इंटरनेट की भाषा अंग्रेजी न होकर हिन्दी होगी।''

इस्लामिक देश संयुक्त अरब अमीरात में यह मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक भाषा है। इसी क्रम में हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य की बात करें तो जापान में हिन्दी की पढ़ाई हिन्दुस्तानी के रूप में सन् 1908ई0 से प्रारंभ हुई,जिसे ज्यादातर व्यापार करने वाले लोग पढ़ाया करते थे, पर बाद में इसका पठन–पाठन विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा किया जाने लगा। जापान में हिन्दी का पठन–पाठन फिल्मी गीतों के माध्यम से किया जा रहा है। आज वहाँ सात एफ.एम. रेडियो स्टेशन भारतीय संगीत का प्रसारण करते हुए जापान में हिन्दी की उपस्थिति को दिखाते हैं। जापान में सन् 1921 ई0 में नौ विदेशी भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं, जबकि आज इनकी संख्या 26 हो चुकी है, जिसमें हिन्दी शामिल है। जापान में तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज तथा ओसाका यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, हिन्दी शिक्षण के दो प्रमुख केन्द्र हैं। दोनों ही जापान में हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने के लिए प्रसिद्ध हैं। तोक्यो

यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज अपने नाट्य मंचन के लिए प्रसिद्ध है।

अमेरिका के लगभग तीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है। अमेरिका के चारों कोनों में हिन्दी अध्ययन का बोल–बाला है। ''अमेरिका में जन्में सेम्यूअल केलॉग ने सन् 1875 ई0 में 'एक ग्रामर ऑफ हिन्दी लैंग्वेज' नामक पुस्तक तैयार की। हेनरी होर्निग्सवाल्ड ने 'स्पोकन हिन्दुस्तानी' की रचना की। प्रो0 गंयर्स ने हिन्दी रीडर, माइकेल शोपिरों ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' तैयार किया है। डॉ0 चार्ल्स हाईट, डॉ0 लिण्डा बेस ने भारतविद् के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की है, इन्होंने रामलीला पर विशेष अध्ययन किया है।'' अमेरिका में हिन्दी फिल्मों गीतों के माध्यम से पढ़ाई जाती है और प्रवासी भारतवंशी हिन्दी की अलख और संस्कृति को जगाए रखे हैं। अमेरिका में हिन्दी के विकास में चार संस्थाएँ प्रयासरत हैं जिनमें अखिल भारतीय हिन्दी समिति, हिन्दी न्यास, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति प्रमुख हैं। अमेरिका की भाषा नीति में दस नई विदेशी भाषाओं को जोड़ा गया है जिनमें हिन्दी भी शामिल है। हिन्दी शिक्षा के लिए डरबन में हिन्दी भवन का निर्माण किया गया और एक कम्यूनिटी रेडियो के माध्यम से हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। इसी क्रम में मॉरीशस में हिन्दी का वर्चस्व है तथा उनका संकल्प हिन्दी को विश्व भाषा बनाने का है। सन् 1996 ई0 में वहाँ हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई है और उसकी दो पत्रिकाएँ वसंत और रिमझिम प्रकाशित हो रही हैं। मॉरिशस से भारत में भोजपुरी हिन्दी बोलने वाले लोग अधिक अनुपात में गए हैं– ''मॉरिशस की मूलभाषा क्रियोली है। फ्रेंच का प्रभाव भी इस देश पर है। इसलिए यहाँ की भोजपुरी, क्रियोली तथा फ्रेंच से प्रभावित है। मॉरिशस में रहने वाले भारतीय निवासियों के नाम भी हिन्दी प्रदेश के भोजपुरी की तरह है।'' हिन्दी के प्रयोग को लेकर इसे छोटा भारत भी कहा जाता है।

आज हिन्दी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है उसमें रोजी–रोटी की तलाश में अपना वतन छोड़कर गए गिरमिटिया मजदूरों के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। गिरमिटिया मजदूर अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी लेकर गए, जो आज हिन्दी को वैश्विक स्तर पर फैला रहे हैं। आज एशिया के अधिकतर देशों, चीन, श्रीलंका, कंबोडिया, लाओस, थाईलैण्ड, मलेशिया, जावा आदि में रामलीला के माध्यम से राम के चरित्र पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है। हिन्दी की रामकथाएँ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक बन चुकी हैं। इसी क्रम में दूर देश से निकलने वाली हिन्दी पत्रिकाओं ने भी हिन्दी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (संयुक्त राज्य अमीरात), मॉरीशस हिन्दी संस्थान, विश्व हिन्दी सचिवालय हिन्दी संगठन (मारीशस), हिन्दी सोसाइटी (सिंगापुर), हिन्दी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक युग बाजारबाद तथा भुमण्डलीकरण का युग है। यहाँ व्यापारी वर्ग अपने लाभ के लिए अपने देश के साथ ही दूसरे देशों से भी संपर्क बनाकर मुनाफा कमाना चाहता है। इसके लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिससे दोनों में विचारों का आदान–प्रदान सरलता से हो। चूँकि हिन्दी भाषा में अपनी बात को समझना और समझाना सरल होता है, इसलिए यहाँ इसे सम्पर्क की भाषा के रुप में प्रयोग करके हिन्दी भाषा का विकास बाजारबाद में भी हुआ है। देश की छोटी बड़ी कम्पनियाँ अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा में विज्ञापनों को जारी करना उचित समझ रही हैं क्योंकि हिन्दी भाषा राज्यों में शहरी बाजार के साथ–साथ ग्रामीण बाजार भी अस्तित्व में आने लगे हैं। इससे भाषा का विस्तार होता है। वास्तव में जब नई वैश्विक आर्थिक और जनसंचार शक्तियाँ हिन्दी जगत से जुड़ती हैं तो इसके साथ ही वे दक्षिण एशिया में

भी अपना स्थान बनाना शुरु कर देती हैं। वैश्वीकरण के बाद हिन्दी भाषा की भूमिका के कारण अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। हिन्दी की इस निरन्तर प्रगतिशील स्थिति को कायम रखने के लिए इस क्षेत्र में अधिक काम करने की आवश्कता है। हिन्दी आज विश्व पटल पर अपनी महत्वपूर्ण पहचान बना चुकी।

हिन्दी अब केवल मध्य वर्ग की भाषा नहीं है। मीडिया की समुन्नत व्यवस्था से हिन्दी न केवल हिन्दुस्तान के गाँव–गाँव में फैल गयी है, बल्कि विदेशों की गलियों में भी अब स्थानीय रंग–रूप के साथ घूमने लगी है। हिन्दुस्तान की करोड़ों की आबादी में से अस्सी करोड़ से अधिक लोग हिन्दी को उपयोग में लाते हैं, तो उससे अधिक उपभोक्ता विदेश के लगभग 150देशों में हिन्दी से अपना सम्पर्क बनाए हुए हैं।

अन्ततः भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में हिन्दी के सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण की प्रवृत्ति और बाजारीकरण एवं अर्थाजन को दूषित प्रवृत्तियों से प्रतिबन्धित कर, सशक्त सामाजिक भाषा के रूप में विकसित होना होगा, इसके लिये हम सभी को हर दृष्टि से हर सम्भव समन्वित प्रयास करने होंगे, तभी कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर का वह स्वप्न पूरा हो सकेगा, जिसे उन्होंने इस प्रकार देखा था ''जिस हिन्दी भाषा के खेत में, भावों की ऐसी सुनहरी फसल लहलहा रही है, वह भाषा भले ही कुछ दिन यों ही उपेक्षित पड़ी रहे, पर उसकी स्वाभाविक उर्वरता अक्षुण्ण रहेगी। वहाँ फिर हरीतिमा के सुदिन आयेंगे और पौष मास में फिर नवान्न उत्सव आयोजित होगा।''

भारत में नब्बे के दशक से शुरू हुए उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण में हमारी अर्थव्यवस्था के द्वार विदेशी निवेश के लिए खोल दिए क्योंकि भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी आबादी वाला देश है और इसलिए आज से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार भी है। अतः कोई भी बहुराष्ट्रीय कंपनी इतने बड़े उपभोक्ता बाजार को नजरअंदाज नहीं कर सकते। भारत के साथ अपने पारंपरिक सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए चीन, अमेरिका ,ब्रिटेन,जापान ,ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी के देशों में भी आजकल हिंदी व्यापक स्तर पर पढ़ी और पढ़ाई जा रही है। भारत के इस बड़े उपभोक्ता बाजार का एक बड़ा हिस्सा हिंदी भाषा लिखने पढ़ने वालों हिंदी बोलने वालों और हिंदी समझने वालों का है । उन्हें इन उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए इनकी भाषा, संस्कृति आदि का ज्ञान आवश्यक था, इसलिए वह आज न केवल अपने स्टाफ को हिंदी सिखा रहे हैं बल्कि अपने उत्पादों की लेवल इन पैकेजिंग और यूजर मैनुअल भी हिंदी में तैयार करा रहे हैं। भारत की लगभग 140 करोड़ की जनसंख्या में लगभग 40 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है । यह आँकड़ा एक बड़े उपभोक्ता वर्ग का सहज रूप से निर्माण और इस वर्ग तक पहुँचने के लिए हिंदी और भारतीय भाषाएँ विशेष कारगर माध्यम बन रहे संचार माध्यमों के विकास में इंटरनेट के उदय ने हिंदी को भी पर्याप्त जगह दी है। यही कारण है कि विज्ञापन की हिंदी का विकास हो रहा है। आज विज्ञापन बाजार के कुल विज्ञापनों का 75 प्रतिशत माध्यम हिंदी है। 21 वीं सदी के अंतिम 2 दशकों में हिंदी का अंतरराष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। वेब ,विज्ञापन, इंटरनेट, संगीत ,सिनेमा, जनसंचार माध्यमों और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की माँग बहुत तेजी से बढ़ी है।

हिंदी बाजार की भाषा बन चुकी है। आने वाले दिनों में इसका स्वरूप विश्वव्यापी होगा। आज भी पूरे विश्व में सौ करोड़ से अधिक जनता हिंदी बोलती एवं समझती है। चीनी भाषा के पश्चात हिंदी पूरे विश्व में दूसरे नंबर की बोली जाने वाली भाषा है। भविष्य में हिंदी भाषा के विकास की आपार संभावनाएँ हैं। बाहर की विदेशी कंपनिया आज हिंदी के अपने शॉफ्टवेयर बनाकर बाजारवाद को बढ़ावा दे रही हैं। इससे

हिंदी में काम करना तथा हिंदी बोलना बाजार की मजबूरी बन गया है। इसी कारण असंख्य उत्पादों को बेचने के लिए भी विदेशी कंपनिया हिंदी भाषा का प्रचार कर रही हैं। पिछले दो दशकों में रेडियो, टीवी तथा प्रिंट पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी समाचार पत्रों का जो स्वरूप विकसित हुआ है। उससे भी हिंदी को बढ़ावा मिला है। विज्ञापनों तथा टीवी सीरियलों में माध्यम से हिंदी विदेशों में प्रचारित एवं प्रसारित हुई है। आज विदेशों में हिंदी फिल्मों के गीत गुनगुनाए जाते हैं।

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस दौर मे जबकि विश्व की अधिकतर संस्कृतियाँ और भाषाएँ पश्चिमी या विशेष रूप से अमरीकी संस्कृति और अँग्रेजी भाषा के दबाव में हैं। ऐसे मे हिंदी भाषा की वास्तविक स्थिति और उसके विकास से जुड़े संदर्भों पर विचार करना आवश्यक है। संपर्क भाषा, राष्ट्रीय भाषा व विश्व भाषा के रूप में हिंदी के विकास परचम को देखते हुए यह आशांवित हुआ जा सकता है और इसे नई पीढ़ी भी अपना सकते हैं क्योंकि हम जैसे–जैसे दुनिया में आर्थिक रूप से उभर रहे हैं। हमारी हिंदी की कद्र भी बढ़ती जा रही है। आज भूमंडलीकरण के वाहक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद को हिंदी के माध्यम से हम तक पहुँचना चाहती हैं। ''नोबेल पुरस्कार विजेता विश्व बैंक के पूर्व अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिंगलिट्स 'दि ऑब्जर्वर लंदन' के हवाले से कहते हैं कि भूमंडलीकरण जिस कार में सवार होकर दिग्विजय के लिए निकलता है उसके चार पहिए हैं – निजीकरण, पूँजी बाजार का उदारीकरण, बाजार आधारित मूल्य निर्धारण और मुक्त बाजार। भूमंडलीकरण अपने मुक्त व्यापार के लिए भाषा और संस्कृति को मोहरा बनाता है, वह एक ऐसी भाषा का निर्माण करता है जो गतिशील और अविश्वनीय होती है। उसने अपने बाजार का विस्तार करने के लिए बहुसंख्य लोगों की भाषा हिंदी को गले लगाया है।'' यह तो सच है कि भूमंडलीकरण ने हिंदी की ताकत को पहचाना है तथा हिंदी का भूमंडल पर गाना–बजाना, साहित्य–संस्कृति का रंग–बिरंगा तराना आदि इसे विश्व की भाषाओं में सयाना का दर्जा दिए जा रही है। आज हिंदी की भूमिका संपर्क, संप्रेषण व सानिध्य की है, बॉलीवुड की फिल्में खाड़ी के देशों सहित एशिया, यूरोप आदि के देशों में खूब पसंद की जा रही हैं, कैरियर के लिहाज से भी अपरंपार संभावनाएँ हैं। तभी तो डॉ. किशोर वासवानी इन्हीं संभावनाओं के मद्देनजर हिंदी को उद्योग की संज्ञा देते हैं। आखिर उद्योग कहने का क्या अभिप्राय। क्या इस उद्योग में साबुन, शैंपू का उत्पादन होगा, तो हम कहेंगे कि नहीं, क्योंकि हिंदी भाव, प्रेम, वेदना, प्रतिरोध की चेतना से अभिभूत है। यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि हिंदी एक भाषा नहीं बल्कि एक चेतना है। इस भाषा के समक्ष आज सबसे बड़ी चुनौती यही है कि कैसे इसे ज्ञान–विज्ञान की भाषा बनाएँ?

संदर्भ सूची

1. पी.आर. निवास शास्त्री, कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
2. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
3. मोहम्मद डॉ0 मलिक : राजभाषा हिन्दी,प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली– 1100030, सं0 1993 ई0।
4. रचना (पत्रिका) मई जून 2018 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
5. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994
6. शर्मा रामविलास– भाषा और समाज– राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी

सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989

7. शर्मा रामविलास–ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
8. सांकृत्यायन राहुल–राष्ट्रभाषा हिन्दी–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
9. द्विवेदी महावीर प्रसाद–हिन्दी भाषा –वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
10. गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा–राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995
11. मृगेश मणिक, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
12. मुले, गुणाकर शर्मा, सुभाष, मिश्र, देवेन्द्र (सं.), हिन्दी भाषाः विविध आयाम, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2006
13. Mangalam Kumar, S. Mohan, India's Languages Crisis An introductory study. New Century, Book House, Madras, 1965
14. दुबे मालती– वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद,प्राक्कथन, 1992,1999
15. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
16. भट्ट मोहनलाल, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
17. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
18. दैनिक भास्कर (समाचार पत्र दिनांक 14 सितम्बर 2019) जबलपुर संस्करण
19. बाहरी डॉ0 हरदेव : हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
20. बाहरी डॉ0 हरदेव : शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0
21. आफताब आलम : द सण्डे इण्डिया, 30 मई 2010ई0
22. विनीत कुमार : नया ज्ञानोदय, मई 2010
23. प्रभाकर श्रोत्रिय : 'अन्यथा' जुलाई 2006
24. वागर्थ, दिसम्बर 2009
25. अक्षरा (पत्रिका) सितम्बर अक्टूबर 2015 म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
26. रचना (पत्रिका) 15 जुलाई 2015, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)